International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 8, Issue 07, July 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

जया जादवानी – स्त्री मन की गहराई से परख

बलप्रदा श्रीवास्तव
शोधार्थी
(बरकतउल्ला विश्वविद्यालय)
भोपाल (म.प्र.)

''दुनिया की औरतों होश में आओ। कोई भी तुम्हारे विकास में उत्सुक नहीं है, सिवा तुम्हारे... ।''[1]

अपने रचना संसार के माध्यम से पाठकों के मनोजगत से लेकर उनके व्यवहारिक सीमा तक जुड़ने वाली लेखिका है जया जादवानी। वे मनोजगत की लेखिका है। मध्यमवर्गीय परिवेश के मन मानस की उन्हें गहरी समझ है। स्त्री मन की गहराई से पड़ताल करती उनकी रचनाएँ, समकालीन साहित्य में अपनी विशिष्टता के कारण पहचानी जाती है। मध्यमवर्गीय स्त्री मन की थाह लेने के लिए उन्होंने परिवेश को औजार की भाँति प्रस्तुत किया है। परिवेश के द्वारा उन्होंने नारी पात्रों के वर्तमान एवं अतीत में झाँका है। जया ने नारी मन की संवेदनाओं, उसकी मधुर कोमल–भावनाओं को स्पर्श करने के साथ–साथ ही उसकी हीन भावनाओं एवं अन्य मानसिक ग्रंथियों का उद्‌घाटन भी किया है।

हालाँकि स्त्री मन की बात पुरुष साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओं में कही है। परंतु 'स्वानुभूति' एवं 'सहानुभूति' का फर्क तो पड़ता है। इस पर महादेवी वर्मा कहती है कि ''पुरुष के द्वारा नारी चित्रण अधिक आदर्श बन सकता है। परंतु अधिक सत्य नहीं। विकृति के अधिक निकट पहुँच सकता है किंतु यथार्थ के अधिक समीप नहीं। पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है नारी के लिए अनुभव। अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेंगी, वैसा पुरुष

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

बहुत ही साधना के उपरांत भी शायद ही दे सकें।''[2] ''अनुभव की प्रामाणिक अभिव्यक्ति तब ही संभव है जब अनुभवों की प्रत्यक्ष अनुभूति हो।''[3]

जया जादवानी के कहानी संग्रह मुझे ही होना है बार–बार की कहानियों में स्त्री के निजी एवं अंतरंग अनुभवों की अनुभूति व्यक्त हुई है। यह जया की गहन जीवन दृष्टि ही है जो यथार्थ रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हुई है। 'लड़की आसमान में' संग्रह की ऐसी ही एक कहानी है जिसमें लड़की बचपन की दहलीज से निकलकर युवावस्था में प्रवेश कर रही है। उसके सपने आसमान जितने बड़े एवं इंद्रधनुष जैसे सतरंगी हैं। वह तारों से भरे आसमान को अपनी मुट्ठी पे भर लेना चाहती है और चाँद को अपने माथे का टीका बनाकर उसकी रोशनी में हँसती और खिलखिलाती है परंतु ''फिर एक दिन बारिश हुई...इतनी तेज की सब कुछ बह गया। आसमान का कोई रंग न दिखता... न सलेटी न नीला, न मटमैला...वह उस तेज बारिश में सब कुछ का बहना देखती रही...।''[4] यह कहानी सदियों से बड़ी होती उन लड़कियों की स्थिति को दर्शाती है जो सपने तो देखती है पर उसके टूटने पर उन्हें तकलीफ होती है। उस लड़की को लगता है कि जैसे–जैसे वह बड़ी हो रही है उसे स्वयं का कमरा एवं आस–पास के घर भी उसे घूर–घूर कर देख रहे हैं। और उसे इन निगाहों से मुक्ति नही मिल रही है। उसकी माँ भी उसे सपने देखने से रोकती है, शायद कहीं न कहीं माँ के सपने भी इसी तरह टूटे होंगे, इसलिए वह नहीं चाहती कि बेटी को उस तकलीफ का एहसास हो।

एक दिन लड़की को एहसास हो गया कि उसके सपने रात के पिंजरे में कैद है और उन पर एक बड़ा सा ताला लगा है। सपनों ने उसे बताया कि वह उसके लिए सिर्फ रात में बाहर आ सकते हैं, दिन में नहीं। जब लड़की ने प्रश्न किया... क्यों? एक सपने ने उंगली उठाकर दूसरी तरफ इशारा किया... उधर देखो...।'' घर के सामने का दृश्य... नंगी खाट पर उसका बाप कीचड़ से सना पड़ा है। उसकी नाक बज रही है। वह जानती है, रात को नाली में गिरा होगा पीकर, किसी ने निकाला होगा और खाट पर डाल दिया होगा। उसे नाली में गले तक लिथड़े खड़े सुअर की याद आई, जो अपनी थूँथनी से नाली को कुरेदा करते हैं। उसे उबकायी आने लगी। वह कई कदम पीछे हट गई, उसने मुँह फेर लिया...। सपनों ने देखा और हंस पड़े....।''[5] **सप**ने भी जानते हैं कि अगर वह दिन में भी आने लगे तो दोनों का कत्ल कर दिया जाएगा। लड़की सोच रही है– एक तरफ सपने हैं दूसरी तरफ हकीकत, वह क्या करें,

कहाँ जाएं, वह अपने सपने पूरे करे या हकीकत के अंधेरों में खो जाए। वह उन दोनों के मध्य उदास खड़ी है। संग्रह की एक अन्य कहानी है 'तीसरा कक्ष'। प्रत्येक स्त्री की जिंदगी में तीन कक्ष होते हैं। परंतु उसे सिर्फ दो ही कक्षों के बारे में पता होता है। पहला कक्ष उसके पिता का घर–परिवार, दूसरा कक्ष है पति का घर–परिवार एवं तीसरा कक्ष है उसका स्वयं का अंतर्मन। पहले और दूसरे कक्ष में ज्यादा अंतर नहीं है दोनों कक्ष में चीजें एक जैसी ही होती हैं। बस उन्हें देखने का नजरिया अलग होता है। किंतु तीसरे कक्ष में वैसा नहीं होता जो हम सोचते हैं। पहला कक्ष है– लड़की का पितृसत्तात्मक परिवार उसका घर, जहाँ उसकी परवरिश होती है, उसका समाजीकरण किया जाता है, उसे अच्छे संस्कार दिए जाते हैं, उसे इस तरह ट्रेंड किया जाता है कि दूसरे कक्ष में वह सरलता से निर्वाह कर सकें। दूसरा कक्ष है– उसका ससुराल, जहाँ पति उसे अपने तरीके से रखना चाहता है। वह उसे बताना चाहता है कि मैंने तुम पर एहसान किया है, मेरी वजह से तुम सौभाग्यवती हो, तुम्हारी शारीरिक जरूरतें पूरी हो रही हैं, कपड़ा, खाना रहना और संतान। क्या नहीं दिया मैंने तुम्हें...। मैंने, तुम्हें तुम्हारी सुंदरता का एहसास दिलाया है। जैसे बचपन में उसके खेलने के लिए खिलौने होते हैं, उसी तरह ससुराल में उसकी गोदी में संतान होती है। दोनों कक्ष में परिस्थितियाँ लगभग समान ही हैं। और तीसरा कक्ष है स्त्री का अंतर्मन, वह अपने मन के भीतर ही रहती है, वहाँ उसकी अपनी एक अलग ही दुनिया है, जिसके बारे में कोई नहीं जानता। वह किसी को बताना भी नहीं चाहती क्योंकि उसे समझने वाला भी कोई नहीं है। तीसरे कक्ष में वह अपने बारे में सोचती है। पर हमारे पुरुष प्रधान समाज में लड़कियों का अपने बारे में सोचना बहुत बुरी बात है, मानों जैसे कोई गुनाह कर दिया हों। पर लड़की इस कक्ष में सोचती है कि वह कब तक इन दोनों कक्षों में इस तरह रहेगी जहां उसका कुछ भी नहीं है। जब तक वह चाहेगी बस तब तक। और जिस दिन वह सोच लेगी कि उसे अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने हैं तो कौन रोकेगा उसे....? ''एक बार मैंने सोचा, इस सुरंग की गहरी काले पानी की इस नदी के दूसरी तरफ जाया जाय– देखें तो क्या है उस पार? मैंने अपना तमाम जीवन नासमझियों में गुजारा है, पर अब चाहती हूँ कुछ जानूँ– वह क्या है, जो...। और मैं इसमें उतर गयी... उतरकर उस पार चली गयी...। और फिर वापस नहीं आयी। और ये जो मैं बोल रही हूँ– अब छोड़िए न, सारे राज, जरूरी हैं, खोले जाएं– और अब तुम ऊपर ही रहना, समझे? द्वार में तुम्हारे मुँह पर बंद करती हूँ।''[6] कहानियाँ हमारे जाने–पहचाने जीवन के अनदेखे, अनजाने रह जाने वाले पहलुओं से हमें वाक़िफ कराती

है। स्त्री की भूमिका की पड़ताल के साथ–साथ विराट मानव जीन और उसकी समस्याओं का जायजा भी कहानियों में लिया गया है, जिस पर अलग से ध्यान देने की जरूरत है।

कहानी 'शाम की धूप में' में लेखिका ने एक ऐसी स्त्री के अन्तर्जगत को खोला है, जिसने पति–बच्चों और परिवार के लिए जिन्दगी होम कर दी। लेकिन कभी किसी ने उसकी तकलीफ जानने का प्रयास नहीं किया। बेटे और बहुएँ तो दूर की बात है, पति ने भी कभी उसका मन जानने की कोशिश नहीं की। और अब, जब बुढ़ापे में खुद 'सेठ' को बहू, बेटे नहीं पूछते तो उन्हें पत्नी के साथ अपने दुर्व्यवहार का आभास मिलता है। लेकिन उन्होंने तो कभी–भी पत्नी के साथ सुख–दुख बाँटने का संबंध नहीं रखा तो आज किस मुँह से उसके पास जाएँ। बहुओं का 'सेठ' के प्रति दुर्व्यवहार उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे मन ही मन बेटों–बहुओं को कोसती हैं कि तुम्हारे बच्चे भी तुम्हारे साथ ऐसा ही बर्ताव करेंगे, तब पता चलेगा। लेकिन अगले ही पल उनका मन सेठ के लिए वितृष्णा से भर गया। अपने सम्पूर्ण पिछले जीवन की तस्वीर उनकी स्मृति में उभर आई, ''सारी जवानी बांदियों की तरह सेवा की, कौन–सी कद्र की तुमने। सुख लेने देने का तो हमारा रिश्ता ही नहीं रहा कभी। क्या नहीं किया तुम्हारे लिए? क्या था तुम्हारे पास? पाकिस्तान में थे, तब भी रोजगार की मुसीबत। दिन भर सास के साथ मशीन चलाती और घर की रोजी–रोटी चलती, बँटवारा हुआ तो कैंपों में रहे, वहाँ भी मशीन चलाई। पेट से थी जब बँटवारा हुआ था, आपाधापी में बच्चा भी नहीं रहा। कभी कच्चा कभी पक्का, जो मिला, खाकर गुजारा किया, मगर तुम्हें हमेशा अच्छा दिया।''[7] लेकिन इस सबका परिणाम क्या मिला इस औरत को? ''न औलाद अपनी हुई न तुम।''[8]

वर्तमान पीढ़ी की शिक्षित और जागरूक औरत उस आत्मपीड़ा की स्थिति से बाहर आकर स्थिति का विश्लेषण करती है क्योंकि बदली हुई परिस्थितियों ने उसे इस तरह सोचने की दृष्टि दी है। पुरूष से उसके रिश्ते हों या परिवार, समाज और संस्कृति में उसकी भूमिका का प्रश्न–आधुनिक स्त्री सब कुछ पर अत्यंत तटस्थ दृष्टि से विचार करती है और अपनी सार्थकता तलाशती है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया सबसे पहले मानसिक स्तर पर घटित होती है। वह स्त्री जो अब तक संस्कारों, परम्पराओं और व्यवस्था की जकड़न में कैद थी, जो पढ़ी–लिखी, संवेदनशील किन्तु रूढ़ियों की कब्र में सोई थी, अब जाग रही है। आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया ने उसे मानसिक रूप से मुक्त किया है।

मध्यमवर्गीय समाज में स्त्री–पुरूष संबंधों की पोल खोलती है कहानी ''वहाँ मैं हूँ।'' सामाजिक संबंधों के साथ–साथ यहाँ पति–पत्नी के संबंधों में भी दिखावा हावी है। संस्कारों में जकड़ी स्त्री सब–कुछ जान–बूझकर भी अनदेखा करती रहती है। दरअसल उसे बचपन से ही ऐसा करने की आदत है। और उसने रास्ता भी बहुत सुरक्षित खोजा है अपने लिए–वह मन को परे कर लेती है और देह को छोड़ देती है – भुगतने को। चाहे पति के साथ शारीरिक संबंध हों, या सामाजिक संबंध वह देह के स्तर पर ही हर जगह शामिल है। किसी को शक न हो इसलिए स्त्री पुरूष दोनों परस्पर प्रगाढ़ प्रेम का दिखावा करते हैं, ''हमारे बीच का प्रेम मर चुका था और अब हम उसकी लाश को फेंक नहीं नही रहे थे, बार–बार सँभाल रहे थे, भ्रम की तरह।''[9] लेकिन स्त्री और पुरूष कोई भी इस स्थिति को स्वीकारना नहीं चाहता, ''किसी दिन जब हमारा ड्राइंगरूम बाहर से आए लोगों से भरा होता। हम उसी ठठरी को झाड़–पोंछ अच्छे से सजा देते।''[10] और देखने वाले बड़ी हसरत से देखते हैं कि हाय! हमारे पास तो कुछ भी नहीं, और इनके पास कितनी खुशियाँ हैं! लेकिन भीतर से यह हर एक संबंध की सच्चाई है।

स्त्री जो अब तक सब–कुछ ज्यों–का–त्यों चलाने की कोशिश कर रही थी, अब वह इस सबसे छुटकारा चाहती है। उसने तय कर लिया है कि अब वह अपनी देह को यह सब भुगतने के लिए नहीं छोड़ेगी। वह जान गई है कि देह और मन मिलकर उसके वजूद को बनाते हैं इसलिए अब देह और मन को अलग–अलग दिशाओं में रखकर वह अपने आपको और नहीं बिखरने देगी। जिस क्षण उसने गहन चिन्तन–मनन के बाद इस हकीकत को स्वीकार किया, वह क्षण उसके जीवन का सबसे अहम क्षण बन गया। अब उसे द्वंद्व से मुक्ति मिल गई।

हाँलाकि वह बाह्य यथार्थ की कटुता से वाकिफ़ है, लेकिन फिर भी वह इस क्षण को जितना हो सके, विस्तृत कर लेना चाहती है। ''मैंने उस लम्हे को अच्छी तरह फैला लिया– अपने अंदर से बाहर तक। हाँ वह फैल सकता है। पर जितना फैलता जाता है, कमजोर होता जाता है। उसकी परत किसी भी क्षण टूट सकती है और मैं उसकी सुरक्षा के दायरे से बाहर फेंकी जा सकती हूँ। जैसे किसी झील पर एक हल्की–सी परत बर्फ की जम जाती है, बेहद कड़ाके की ठण्ड में...हम सोचते हैं हम निकल जाएँगे। पर बर्फ टूट जाती है और हम अंदर जा गिरते हैं।''[11]

यहाँ लेखिका ने अत्यंत सटीक उदाहरण के माध्यम से स्त्री–मुक्ति की राहों की कठिनाइयों का चित्रण किया है। स्त्री में अपने बारे में सोचने–समझने की जो मानसिक चेतना जागी है, उससे वह अपने लिए स्वतंत्रता के स्पप्न देखने लगती है, लेकिन अपनी राह की कठिनाइयों से भी वह वाकिफ है। फिर भी यह स्त्री जितना सम्भव हो सके, अपनी मानसिक जाग्रति के क्षण को जीना चाहती है, ''पर जब तक...बर्फ टूटने के पहले तक मैं तो हूँ और वह लम्हा भी है ही...बहुत है।''[12] अब तक पुराने संस्कारों की कब्र में सोई हुई स्त्री अगर अपने बारे में सोचने लगी है तो यह भी कोई कम महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं है। मानसिक जाग्रति ही भावों और विचारों के अबाध प्रसार की दिशा में सबसे पहला कदम है, और आज की संवेदनशील स्त्री इस दिशा में आगे बढ़ चुकी है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. जया जादवानी, मिठो पाणि खारो पाणि, ज्ञानपीठ प्रकाशन लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2014
2. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ (निबंध) पृष्ठ 66, 1993
3. जगदीश्वर चतुर्वेदी, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, पृष्ठ 7, 2018 (अनामिका पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स लिमि.)
4. जया जादवानी, मुझे ही होना है बार–बार, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 32, 2000
5. वहीं, पृष्ठ 37
6. वहीं, पृष्ठ 77
7. जया जादवानी, 'शाम की धूप में', मुझे ही होना है बार–बार, (कहानी संग्रह से) पृष्ठ 20
8. वहीं, पृष्ठ 20
9. जया जादवानी, 'वहाँ मैं हूँ', मुझे ही होना है बार–बार, (कहानी संग्रह से) पृष्ठ 27
10. वहीं, पृष्ठ 27
11. वहीं, पृष्ठ 31
12. वहीं, पृष्ठ 31

———